दिनांक :- 21-05-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फ़ारूक़ आज़म (अतिथी शिक्षक)

स्नातक :- द्वितीय खंड (कला)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

इकाई :- सात

पत्र :- चतुर्थ

अध्याय : चीन गणतंत्र की दशाब्द (गणतंत्र का छायावास)

यूवान तथा सांसदों के बीच गणतंत्र पर नियंत्रण के लिए निर्णायक संघर्ष हुआ। इसमें संतुलन यूवान के पक्ष में रहा। उसे उत्तर में सैनिकों का समर्थन प्राप्त था, सहायता संघ (consortium) से कोष प्राप्त था तथा दक्षिण में स्वायत्ता की स्वीकृति उसके पक्ष में था। दक्षिण मे सांसदों का कोई समर्थक नहीं था। वस्तुतः आम लोग गणतंत्र का अर्थ

समझने में असफल रहे! उन्हे पुराने तथा नए शासन में कोई अन्तर नही दिखाई पड़ा ! दोनों में नौकरशाही और सैनिकशाही का वर्चस्व था। युवान फौज की मदद से देश में शासन करने लगा।

नई सरकार —

नानकिंग के औपबंधिक संविधान (Nanking Provisional Government) में नई सरकार की रूपरेखा निश्चितकी गई थी ! इसे 1912 ई० में अपरिषद् क्रांतिकारी दल ने तैयार किया था इसका उद्देश्य राष्ट्रपति पर संसदीय सर्वोच्चता स्थापित करना था। इसके लिए कुछ संशोधनों के साथ फ्रांसीसी सरकार की योजना लागू करनी थी। इसके लिए एक मंत्रिमंडल जो कि राष्ट्रनात्मक धारा सभा के प्रति उत्तरदायी न हो. न कि राष्ट्रपति के प्रति . जिसे कार्यपालिका शक्तियों का निष्पादन करना है।

इसके अतिरिक्त वित्त, संधियो तथा अध्यादेशो पर सदन की सहमति आवश्यक थी।

उपर्युक्त संविधान डॉ० सनयात सेन के समझौता सिद्दांत के अनुकूल न था। क्रांतिकारी नेता युवान पर विश्वास नहीं करते थे। उन्होंने उसे तीन कारणों से राष्ट्रपति मान लिया था। प्रथम उसे उत्तरी सेना पर नियंत्रण था। द्वितीय उसमें प्रशासनिक योग्यता थी। तृतीय उसे पश्चिमी सरकारों में लगाव था। उस पर क्रांतिकारियों का विश्वास तब उठ गया जब समझौता के अनुसार राजधानी पीकिंग से नानकिंग स्थानान्तरित नहीं की गई। पीकिंग में ही 10 मार्च 1912 ई० को युवान राष्ट्रपति घोषित किया गया तथा औपबंधिक संविधान लागू किया गया। युवान पीकिंग में था अतएव नानकिंग परिषद् भी वहीं आ गई। इस प्रकार प्रथम संघर्ष में युवान विजयी रहा। अब स्पष्ट हो गया कि कागजी समझौतों में उसे बाँधना कठिन है।

Scanned with CamScanner

नानकिंग परिषद् उसकी महत्त्वाकांक्षाओं पर नियंत्रण डालने में असफल रही।

सरकार की समस्याएँ ⟶

नवीन गणतंत्र को शीघ्र ही दो समस्याओं का सामना करना पड़ा। पहली समस्या पीकिंग तथा प्रांतीय सरकारों के पुनर्निर्माण की थी जिससे सैनिक की जगह असैनिक नियंत्रण कायम किया जा सके। दूसरी समस्या वित्त की थी। अस्थायी राष्ट्रपति के चुनाव के पूर्व ही युवान ने प्रांतीय प्रशासन के बारे में अपने विचार दिए थे। 13 फरवरी 1912 ई० को उसे साम्राज्यीय तथा क्रांतिकारी गवर्नरों के प्रांतों में बने रहने की घोषणा कर दी थी। उन्हें वहाँ शांति व्यवस्था कायम रखना था। वे पीकिंग के नियंत्रण में थे तथा गणतंत्र की अपेक्षा उसके प्रति वफादार थे। दक्षिणी प्रांतों के अनेक अधिकारी गणतंत्र के समर्थक थे।

Scanned with CamScanner

अतिवादी दल पीकिंग में युवान की सर्वोच्चता का कट्टर आलोचक था। अतः प्रांतों की अपेक्षा पहले राजधानी में ही सत्ता के लिए संघर्ष शुरू हो गया।

नई केंद्रीय सरकार के गठन के लिए युवान को अस्थायी राष्ट्रपति बनाने के बाद मंत्रिमंडल का निर्माण करना था। जब तक सीनेट और प्रतिनिधि सभा के लिए निर्वाचन नहीं होता है तब तक नानकिंग परिषद् द्वारा सभा का काम करेगी। मंत्रिमंडल के गठन के प्रश्न पर पीकिंग और नानकिंग में बड़ी रस्साकसी थी। तांग शाओ-यी (Tang Shao-Xi) प्रधानमंत्री बना जिसे दोनों दलों ने संतोषजनक माना। साम्राज्यीय काल में तांग युवान का आश्रित रह चुका था तथा उसने सनयात सेना की तुंगमेंग हुई (Tung Meng Hui) क्रांतिकारी दल के सिद्धान्तों को मान लिया था। तुवान-ची-जुई (Tuan chi-Jui) युद्ध मंत्री बनाया गया। वित्त मंत्री भी राष्ट्रपति के अनुकूल था।

नए गणतंत्र के लिए वित्तीय समस्या बड़ी गंभीर थी। राज कोष रिक्त था। जब तक प्रांतो मे शान्ति स्थापित नही होती वहाँ कर वसूली भी कठिन कार्य था। अतएव, तात्कालिक प्रशासकीय आवश्यकताओ, सैनिको के वेतन तथा अन्य प्रशासकीय पुनर्गठन के लिए राष्ट्रपति ने ऋण लेने की आवश्यकता महसूस की। मंचू सरकार के पद त्याग के बाद शक्तियों ने चीन को दिए जाने वाले ऋण पर से प्रतिबंध हटा लिए। अतएव, छह शक्तियों ने चीन को दिए जाने वाले बैंक समूह (Consortium) से ऋण लेने की वार्ता शुरु की गई। राष्ट्रपति ने 125,000,000 डालर की माँग की इस ऋण के बदले गणतंत्र के राजस्व को गिरवी पर रखा गया। सरकार ने 10,000,000 डालर ऋण के लिए आंग्ल बेल्जियन सिंडीकेट से समझौता किया। ऋणदाताओं ने चीन के नमक कर (Salt Gabelle) पर नियंत्रण डालना चाहा।

इस प्रश्न पर संसद में बड़ी बहस हुई तथा इसे आपत्तिजनक कहा गया! इसमें चीन की प्रशासकीय एकता पर आँच आती थी! अमरीकी राष्ट्रपति विल्सन ने इसे स्वीकार भी किया

1912ई० में नवनिर्वाचित संसद की बैठक पीकिंग में हुई। इसके सदस्य विभिन्न दलों के थे जिनमें तीन प्रमुख थे! लेकिन किसी का भी संसद में पूर्ण बहुमत नहीं था। अनुदारवादी दल राष्ट्रपति का समर्थक था। दूसरे दल में दक्षिण के अतिवादी सदस्य थे! तीसरा दल संतुलन बनाए हुए था जिसका संसदीय मामलों में कोई निश्चित विचार नहीं था। राष्ट्रपति एक दल को दूसरे से लड़ा-भिड़ा कर या पद-पैसा देकर अपना उल्लू सीधा करने लगा! संसद ने उसके ऋण समझौते पर अपनी सहमति दी

यूवान शी-काई बनाम संसद

1913ई० में संसद पुनः बुलाई गई। इस समय इसके दोनों सदनों में अतिवादी दल का नियंत्रण था। अगस्त 1912ई० में कुंग मिंग हुई ने अपना पुनर्गठन कर लिया था।